रात्रि क्लास 17/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

बच्चों को ख्याल होता है ऐसी युक्ति से बतावें जो उन्हों के समझ में आए। भल अभी म्युज़ियम में आते हैं, अच्छा-2 भी करते हैं; परन्तु फुर्सत कम है। तुम बच्चों को भी इतनी फुर्सत नहीं है। तुमको बाप डायरैक्शन देते हैं बाप को याद करो। नहीं कर सकते हो तो कहते हो फुर्सत नहीं है। माया बाप को याद करने की फुर्सत नहीं देती, फुर्सत ले लेती है, तब कहते हो बाबा सारे दिन में आधा घंटा, एक घंटा याद ठहरती है। एवरेज जो समझते हैं हम दो घंटा याद करते हैं वह हाथ उठावें। योग अर्थात् योग। मास्टर पढ़ाते हैं तो स्टूडेंट का मास्टर से योग होता है ना। वह है स्थूल याद। हेर पड़ी हुई है। जितना घंटा पढ़ते हैं, याद में रहते हैं। यह तो है निराकार बाप। बच्चों को कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाबा इसके लिए कहते हैं कितना समय याद करते हो? थोड़ा-2 करके दो घंटा याद करते हो। जैसे बाबा यहाँ बैठे हैं, बाबा मुरली चलाते हैं, धारणा नहीं होती है तो बुद्धि बाहर चली जाती है। स्कूल में बच्चे धारण करते हैं ना। धारणा हो तो सर्विस भी करे ना। बाबा एक घंटा सुबह हो बैठते हैं तो वह एक घंटा बाप की याद में रहते हो या बुद्धि बाहर चली जाती है? यह है बिल्कुल नई बात। इसमें डिफीकल्ट है। माया की युद्ध चलेगी। कहाँ न कहाँ बुद्धि चली जाती है। अगर सारा सुनें और नोट करें तो याद में रह सकते हैं। बाहर में तो बुद्धि जा न सके। लिंक टूटनी न चाहिए। पिछाड़ी तक जिसकी लिंक नहीं टूटती है वही ऊँच पद पावेंगे। बाप ने समझाया है जितना बाप को याद करते रहेंगे उतना ही तुम खुशी में रहेंगे। जब तुम रजो में थे तो भी तुम बहुत खुश थे। सतोप्रधान थे तो बहुत खुश थे। तमोप्रधान बने हो तो बहुत दुखी हुए हो। यह ड्रामा में नूँध है। योग कैसे लगाया जाता है यह बच्चों को समझाना है, जो वह समझे यह बिल्कुल एक्युरेट बताते हैं। इनको ही सच्चा योग कहा जाता है। यह ज़रूर मालूम पड़ना चाहिए। यह दुनिया ही तमोप्रधान है। ऐसा समझाना चाहिए जो वह समझे, यह अनुभव से कहते हैं। सुनी-सुनाई बात नहीं। हम ही सुखी थे जो दुखी बने हैं। यही पूज्य देवताएँ फिर पुजारी मनुष्य बने हैं। देवताएँ पुजारी होते नहीं। मनुष्य ही पुजारी होते हैं। पुजारी है तो ज्ञान नहीं, पूज्य है तो भक्ति है नहीं। नई दुनिया और पुरानी दुनिया है ना। यह ड्रामा का एक्युरेट हिसाब है। नई दुनिया से पुरानी दुनिया होने में कितना टाइम लगता है। बाप ने बताया है दुनिया की आयु एक्युरेट इतनी है। सेकण्ड भी कम-जास्ती नहीं हो सकता। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है 5000 वर्ष पूरे होने का है। ऐटॉमिक बॉम्ब्स की लड़ाई भी लगेगी। साथ-2 नेचरल कैलेमिटीज़ भी होगी। दोनों मदद दे झटपट काम करेंगे। हॉस्पिटल आदि तो होगी नहीं, कहाँ जावेंगे सभी। मरीज भी खत्म हो जावेगा। विलायत में मौत सहज है; क्योंकि उन्होंने सुख बहुत नहीं उठाया है। रक्त की नदियाँ भी बहेंगी फिर घी। यहाँ दुख भी जास्ती है। वहाँ तो बहुत मीठा-2 मौत है। बैठे-2 बेहोश हुआ, खलास। तुम खुश होंगे उनका मौत तो बहुत सहज हुआ। मौत हो तो ऐसा। ऐसे भी बैठे-2 शरीर छोड़ दे। कर्मातीत अवस्था हो तो गिरे भी नहीं, वह सबसे अच्छा। आगे चल तुम देखेंगे। विलायत में भी होगा जो बैठे-2 खत्म हो जावेंगे। बेहोश भी हर्षितमुख हो। कुछ तो निशानी चाहिए। आत्मा हर्षित होकर जाती है। आत्मा में हर्षितपना होगा तो शरीर पर भी आवेगा। आत्मा बड़ी खुशी से हर्षितमुख होकर शरीर छोड़ती है। उनको कर्मातीत अवस्था कहा जाता। वह यह पद पावेंगे। और चीज़ याद भी न आए। इसको कहा जाता है सबसे मीठा शरीर छोड़ना। इसलिए सर्प का मिसाल देते हैं। प्रैक्टिस यहाँ से होगी फिर चलती रहेगी। इसको कहा जाता है गुप्त मेहनत। तुम ही जानो, और नहीं जानते हैं। हरेक खुद ही जाने हम बाप को कितना याद करते हैं। मोस्ट बिलवेड परमप्रिय बाप है। तुम्हारे सिवाय और कोई एक्युरेट बाप को याद कर न सके। तुमको तो ऑक्युपेशन का पता है। इसलिए मोस्ट बिलवेड कहते हो। परमप्रिय परमपिता परमात्मा। फिर अच्छी बात यह है कि यह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। बाप को भूल जाओ तो टीचर को याद करो। गाइड तो साथ में है ना। लिबरेटर भी, गाइड भी है। यह तो राइट है, दुख से लिबरेट करने वाला है

बाप। बाबा ने सुनाया ज्ञान घास मिला फिर इस पर विचार-सागर-मंथन करते रहो। बाप भी याद आवेगा, चक्र भी याद आवेगा। खुशी का पारा भी चढ़ा रहेगा। शरीर छोड़ हम प्रिन्स बनेंगे। यह फीलिंग नहीं होती है। बच्चों को नॉलेज तो मिली है। अभी बच्चों को यह रहता है ऊँच नम्बर पावें। टीचर भी खुश होगा। देखेंगे अच्छा पढ़ते हैं तो अच्छा पास होंगे। टीचर को इजाफा भी मिलता है। बहुत फेल होते हैं। तो टीचर को बदली कर देते हैं। तुम्हारी बुद्धि में यह सारे विश्व का ज्ञान है, और कोई में नहीं है। वह सभी हैं शूद्र सम्प्रदाय। यह है दैवी सम्प्रदाय। यह तो बुद्धि में याद है ना। अन्दर में ज्ञान चलता रहना चाहिए। इसमें माया विघ्न बहुत डालती है। आँखें धोखा न देवें इसके लिए बहुत मेहनत करनी है। इसमें विजय तब पा सकते हैं जबकि अशरीरी हो रहें। हम बाबा के बच्चे हैं तब आँखें सिविल रहती हैं। है बहुत सहज। हम आत्मा है ना। बाप भी है, फिर भी याद ठहरती नहीं है। बाबा एकदम बाजू में बैठा है। फिर भी तुम जैसे याद करते हो वैसे हमारा तो और ही बुद्धि इधर-उधर जाता है। हाँ, बच्चों से जास्ती सहज है। बाबा के बाजू में बैठे हैं। भोजन पर याद करता हूँ फिर भी भूल जाता हूँ। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडनाइट और नमस्ते।